Loans/advances for development on Western Coast

81. SHRI N.G. GORAY : Will the Minister of COMMERCE be pleased to state :

(a) whether it is a fact that large amounts of loans/advances were given to persons/parties for the development of fisheries and marine products on the Western Coast, during 1971-72, 1972-73 and 1973-74 ;

(b) if so, the names of the persons/parties and the amount given to each one of them during the above period ;

(c) whether it is also a fact that these amounts have been utilised for the smuggling of foreign goods into India ;

(d) whether Government have made any assessment about the utilisation of the loans and advances given ; and

(e) if so, what are the details thereof ?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTERY OF COMMERCE (SHRI V. P SINGH) : (a) to (e) : The information is being collected and will be laid on the Table of the House.

विदेश व्यापार में संतुलन

82. **श्री प्रकाशवीर शास्त्री** : क्या **वाणिज्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पिछले वर्ष आयात और निर्यात की आनुपातिक स्थिति क्या रही ;

(ख) क्या यह सच है कि विदेशी सहयोग वाली कम्पनियों के कारण आयात का अनुपात बढ़ गया है ; और

(ग) यदि हां, तो, क्या निर्यात और आयात को संतुलित करने तथा निर्यात में वृद्धि करने के संबंध में कोई कदम उठाए जा रहे हैं ?

†[**Balancing foreign trade**

82. SHRI PRAKASH VIR SHASTRI : Will the Minister of COMMERCE be pleased to state :

(a) the relative position of imports and the exports during the last year ;

(b) whether it is a fact that the proportion of import has increased owing to the companies having foreign collaboration ; and

(c) if so, whether any steps are being taken to balance the export and import trade or to increase the export ?]

वाणिज्य मंत्रालय में उपमंत्री (श्री वी० पी० सिंह) :

(क) गत वर्ष के दौरान आयातों तथा निर्यातों की सापेक्ष स्थिति निम्नलिखित रही :—

(करोड़ रु०)

	वर्ष	
	1972-73	1973-74
आयात . .	1867.4	2920.9
निर्यात (पुनर्निर्यात सहित)	1970.8	2483.2
व्यापार संतुलन	+103.4	−437.7

(ख) इस समय आयातों के आंकड़ों का संकलन और प्रकाशन वाणिज्यिक जानकारी और अंकसंकलन के महानिदेशक कलकत्ता द्वारा किया जाता है जो आयातवार न होकर सभी आयात मदों के लिए होते हैं। 1973-74 में आयात बढ़ाने का कारण हमारी जरूरतों का अपेक्षाकृत अधिक होना और अन्तराष्ट्रीय कीमतों में वृद्धि है । खाद्यान्न, पैट्रोलियम तथा पैट्रलियम उत्पाद, उर्वरक, अलोह धातुएं, रसायन-सामग्री, लोहा तथा इस्पात आदि आयात की ऐसी प्रधान मदें हैं जिनके कारण कुल मूल्य में वृद्धि हुई।

†[ ] English translation.